भूमिका

यह लघु-प्रबन्ध मैंने हिन्दी के अेक अन्यतम साहित्यकार कमलेश्वर जी के लघु-अुपन्यासों के बारे में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध मैंने कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष, सुप्रसिध्द शोध-निर्देशक डा॰ चन्दूलाल दुबे जी के पूर्ण निर्देशन में पूरा किया है।

वास्तव में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के अूँचे दर्जे के लघु-अुपन्यासकार और कहानीकार कमलेश्वरजी का आज हिन्दी साहित्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वे अपनी कलम की बदौलत हिन्दी साहित्याकाश पर छा गअे। असाधारण रूप से साधारण व्यक्ति हैं - कमलेश्वरजी। सही मायनों में देखा

जाओ तो वे अपनी तारीफ के भूखे नहीं हैं। फिर भी अुनके व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करते समय अुनकी तारीफ किओ बगैर रहा नहीं जाता। कमलेश्वरजी वह शख्स हैं, जिनका नाम हिन्दुस्तान के तमाम अदबी जुबानों में अिज्जत से लिया [redacted] जाता है। अपने युग के साहित्य को नया मोड देने का महत्वपूर्ण कार्य कमलेश्वरजी की रचनाओं नें किया है।

बहरहाल, छोटी अुम्र में ही मैंने अुनका सबसे पहला लघु-अुपन्यास पढ़ा था - 'तीसरा आदमी'। और सचमुच यह लघु-अुपन्यास मुझ पर कुछ अितना असर कर गया कि देखते देखते मैंने अुनके छः लघु-अुपन्यास भी पढ़ डाले। फिर आगे चलकर प्रौढावस्था में हिन्दी-अध्यापन के साथ मेरे दिल में अुनके अिन-लघु-अुपन्यासों के प्रति दिलचस्पी बढ़ती गयी और मैंने सोच लिया कि क्यों न कमलेश्वर जी के अिन लघु-अुपन्यासों पर शोध-कार्य किया जाओ। और फिर वह समय भी जल्द ही आगया। जब मैं शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में अेम्.फिल. हिन्दी का अध्ययन कर रहा था, तब वहीं पर हिन्दी के अेक सुप्रसिध्द समीक्षक और शोध-निर्देशक डा. चन्द्रुलाल दुबे जी से मैंने अिस बारे में बात की, तो वे भी मान गओ और 'कमलेश्वर के लघु-अुपन्यास' यही लघु-प्रबन्ध मैंने अुन्हीं के मार्गदर्शन में पूरा किया, जो आपके सामने है।

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध मैंने छः अध्यायों में विभाजित कर दिया है। प्रथम अध्याय लघु-अुपन्यास के स्वरूप अेवं तत्व-विवेचन से संबंधित है। अिसमें बिलकुल साधारण ढंग से मैंने लघु-अुपन्यास का स्वरूप निरूपण किया है। व्दितीय अध्याय में हिन्दी लघु-अुपन्यास - अुद्भव और विकास के बारे में संक्षिप्त जानकारी मैंने प्रस्तुत की है। तृतीय अध्याय में कमलेश्वर जी के जीवन अेवं

व्यक्तित्व तथा कृतित्व का लेखा-जोखा मैंने पेश किया है। चतुर्थ अध्याय में कमलेश्वर जी के लघु-अुपन्यासों की संक्षिप्त अेवं सामान्य जानकारी प्रस्तुत की है। पंचम अध्याय में अुनके लघु-अुपन्यासों का लघु-अुपन्यासों के मानदण्डों के आधार पर सामान्य विवेचन करने का प्रयास किया है। षष्ठं अध्याय में अुनके लघु-अुपन्यासों का मूल्यांकन आपके सामने प्रस्तुत किया है।

अिस लघु-प्रबन्ध के नामकरण से लेकर अुसके पूरे होने तक डा. चन्द्रलाल दुबे जी का मुझे जो अनमोल मार्गदर्शन मिला, अुसके लिअे मैं अुन्हें तहे दिलसे धन्यवाद देता चाहता हूँ। बगैर अुनके मार्गदर्शन से मेरा यह शोध-कार्य शायद अधूरा ही रह जाता।

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध को पूर्ण करते समय मेरे सामने कअी तरह की दिक्कतें आयीं। फिर भी वे किसी न किसी तरह हल होती रहीं। अिस सिलसिलेमें कमलेश्वर जी के दो लघु-अुपन्यास जो मुझे मिल नहीं रहे थे, अुनको अुपलब्ध कराके भेजने का काम मेरे मित्र श्री. आनन्द साधले (अुप-संपादक, महाराष्ट्र मानस, बम्बअी) ने पूरा कर दिया, अिसलिअे मै अुनका भी आभारी हूँ। अिसके साथ साथ मेरे अिस कार्य को पूरा करने के लिअे मुझे बार बार सचेत करने वाले मेरे सहयोगी प्राध्यापक डा. व्यंकटेश कोटबागे जी (हिन्दी विभागाध्यक्ष, किसन वीर महाविद्यालय, वाअी) का भी मैं आभारी हूँ। दूसरे अिस कार्य को पूरा करने के लिअे मैंने जिन जिन विद्वानों अेवं लेखकों के अुद्धरणों का प्रयोग किया है, अुन सभी का मैं ऋणी हूँ।

प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध - 'कमलेश्वर के लघु-अुपन्यास' आपके हाथों सौंपते

हुओे मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है। मैं दावा नहीं करता कि मेरी यह कृति पूर्ण रूप से निर्दोष है। वास्तव में मेरी यह पहली आलोचनात्मक कृति है। अिसमें जरूर कुछ न कुछ कमियाँ रही होंगी। अिस बात को स्वीकार करते हुओे मुझे तनिक भी सँकोच नहीं होता। फिर भी ये कमियाँ, मेरी अल्पज्ञता की ही कमियाँ होंगी।

अस्तु, मैं अपनी अिस कृति की कमियों को स्वीकार करते हुओे यह लघु-प्रबन्ध आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।

विनीत

प्रा. सरदार मुजावर

स०ज

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय -

हिन्दी लघु-उपन्यास - स्वरूप एवं तत्व विवेचन.

उपन्यास -

लघु-उपन्यास -

लघु-उपन्यास के तत्व -

द्वितीय अध्याय -

हिन्दी लघु-उपन्यास - उद्भव और विकास

हिन्दी लघु-उपन्यासों का उद्भव -

हिन्दी लघु-उपन्यासों का विकास -

प्रेमचन्द पूर्व के लघु-उपन्यास -

प्रेमचन्द युग के लघु-उपन्यास -

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के लघु-उपन्यास -

सन १९६० के बाद के लघु-उपन्यास -

तृतीय अध्याय -

कमलेश्वर - व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

कमलेश्वर का जीवन-परिचय

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का परिचय

कमलेश्वर के कृतित्व का परिचय

कमलेश्वर की फिल्मों का परिचय

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

कहानीकार कमलेश्वर

कहानी-संपादक कमलेश्वर

कहानी के आलोचक कमलेश्वर

चतुर्थ अध्याय -

कमलेश्वर के लघु-अपन्यासों का सामान्य परिचय -

अेक सड़क सत्ताक्न गलियाँ -

ड़ाक बंगला -

लौटे हुअे मुसाफिर -

तीसरा आदमी -

समुद्र में खोया हुआ आदमी -

आगामी अतीत -

पंचम अध्याय -

कमलेश्वर के लघु-अपन्यासों के विवेक्न का सामान्य आधार

१. कथावस्तु -

२. पात्र और चरित्र चित्रण -

३. कथोपकथन -

४. वातावरण -

५. भाषा-शैली -

६. अुद्देश्य -

षष्ठम् अध्याय -

कमलेश्वर के लघु-अपन्यासों का मूल्यांक्न